International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 03-05
Received: 10-04-2022
Accepted: 15-06-2022

अरुण प्रताप सिंह
(पीएच.डी. शोधार्थी), बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
अरुण प्रताप सिंह
(पीएच.डी. शोधार्थी), बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

शांति और अहिंसा की अवधारणाः वर्तमान संदर्भ में

अरुण प्रताप सिंह

प्रस्तावना

शांति व अहिंसा वास्तव में अपने चिरकालीन समय से प्रत्येक समाज व प्रत्येक धर्म का अभिन्न अंग रहा है। शांति व अहिंसा के अभाव में जीवन की कल्पना कर पाना ही स्वयं में असंभव सा प्रतीत होता है। क्योंकि यदि मानवीय जीवन में शांति व अहिंसा का अभाव होगा तो कदाचित मानव, मानव के समान नहीं अपितु पशु की श्रेणी में अपना स्थान आरक्षित कर लेगा। संभवतः इस भू–लोक से मानव जीवन लुप्त होने की श्रेणी में ही आ जाएगा। इसी कारणवश प्रत्येक धर्म ने शांति व अहिंसा को व्यापक रूप में अपने–अपने धर्मों में उचित स्थान प्रदान किया है। जैसा कि जैन ग्रंथ में अहिंसा को उपदेशित करते हुए यह कहा गया है कि "किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए– यही ज्ञानियों के ज्ञान वचनों का सार है। अहिंसा, समता– सब जीवों के प्रति आत्मवत्–भाव इसे ही शाश्वत धर्म समझो।" आचांरांग सूत्र। वहीं बौद्ध धर्म में अहिंसा को व्यापक रूप में अपनाया गया है, तथा "दुःख निवारण" हेतु तथागत ने जिस "अष्टांगिक मार्ग" की बात करते हैं उन्हीं अष्टांगिक मार्ग में "वाक्–कर्मात" व "आजीविका" का सीधा संबंध ही अहिंसक आचरण से है। उसमें यह कहा गया है कि "मन, वचन और कर्म आजीविका सहित सम्यक होने चाहिए। अर्थात् उनके द्वारा किसी अन्य को हानि अथवा किसी भी प्रकार का कोई भी आघात न पहुँचे।"

इसके साथ ही यदि हम 'सनातन धर्म' की बात करें तो हमें वैदिक धर्म–दर्शन के केन्द्र के रूप में अहिंसा प्राप्त होती है जैसे कि "ऋग्वेद में दया को प्रमुख कर्तव्यों में माना गया है।" किसी भी व्यक्ति का अनिष्ट करने को 'पापकर्म' बताया गया है। वही अथर्ववेद में सबके प्रति मैत्रीभाव रखने और पशु पक्षियों के वध को निषेध करते हुए उनकी सेवा करने की बात कही गयी है। इस प्रकार इन श्लोकों व धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से यह प्रमाणित हो जाता है, कि वास्तव में इन प्रमुख भारतीय धर्मों में अहिंसा को एक व्यापक स्थान दिया गया है तथा इन्हीं भारतीय धर्मों से ही विश्व के अन्य धर्मों ने शांति व अहिंसा को व्यापक रूप में आत्मसात किया है।

वर्तमान समय में विश्व जिस तरह हिंसा की पटकथा को लिखता जा रहा है, वह वास्तव में अपने–अपने सम्पूर्ण विनाश की पटकथा को लिखता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। क्योंकि वर्तमान में शांति व अहिंसा ने अपना सूक्ष्म स्वरूप धारण कर लिया है, और जिस गति के साथ समाज की आवश्यकताएं और पृष्ठभूमि बदल रही है, उसके परिप्रेक्ष्य में यदि शांति व अहिंसा ने स्वयं को स्थापित न किया तो सम्पूर्ण विश्व का विनाश निकट ही समझो। यह भी सत्य ही है कि जिस प्रकार से विश्व में आक्रमकता, लोभ, लालच, वैमनस्य, राष्ट्रवाद की धारणा बढ़ती जा रही है– यह सभी कारण ही सम्पूर्ण विश्व को विनाश की ओर ले जाने का कार्य कर रहे हैं। क्योंकि ऐसा नहीं है कि यदि युद्ध या वैमनस्य दो देशों के मध्य चल रहा हो, तो इसका अन्य देशों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सोचना भी अर्थहीन है क्योंकि वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने जिस तीव्र गति से अपना प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर जमाया है। उसी वैवीकरण के प्रभाव ने ही विश्व के सभी देशों को एक दूसरे पर निर्भर बना दिया है। इसी कारणवश यह कहा जाता है कि किन्ही दो या दो से अधिक राज्यों के बीच चलने वाला युद्ध वास्तव में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभाव डालते हैं। इसका उदाहरण हम अपने इतिहास में हुए युद्धों से ले सकते हैं, जिनमें प्रथम विश्व युद्ध (1914 से 1918) व द्वितीय विश्व युद्ध (1939 से 1945) मुख्य रूप से शामिल है। इन विश्व युद्धों ने लगभग सम्पूर्ण विश्व के देशों पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से नकारात्मक, प्रभाव पड़ा व पूरा विश्व एक त्रासदी से गुज़रा था। इन त्रासदी से बाहर निकलने में कई दशकों का समय लगा। वहीं इस युद्ध में कई करोड़ लोग मारे गये व घायल हुए इसके साथ ही कई अरबों व खरबों सम्पत्ति का नुकसान भी सम्पूर्ण विश्व को उठाना पड़ा था।

इसी कारणवश यह माना जाना चाहिए की यदि वर्तमान समय में तीसरा विश्व युद्ध हुआ, तो सम्पूर्ण विश्व इस युद्ध रूपी विभीषिका को झेल नहीं सकता, व समूचे विश्व का विनाश लगभग तय माना जायेगा। क्योंकि यह तीसरा विश्व युद्ध मानव नहीं बल्कि अत्याधुनिक मशीनों व अस्त्र व शस्त्रों द्वारा लड़ा जायेगा। जो कि अधिक से अधिक जान व माल को नुकसान पहुँचाने में समक्ष होंगे।

अतः इसी कारणवश शांति व अहिंसा की आवश्यकता सम्पूर्ण विश्व को वर्तमान समय में सर्वाधिक रूप से है। क्योंकि यह सत्य है कि जब से मानवों ने पृथ्वी पर कदम रखा होगा या फिर अपने

जीवन का शुभारंभ किया होगा, शांति व अहिंसा लगभग उसी समय से ही मानवों के साथ एक सुरक्षा कवच के रूप में साथ में बनी रही है। परन्तु वर्तमान समय में मानवों ने जिस प्रकार से अपनी स्वार्थ–सिद्धि के आवेश में वशीभूत होकर पृथ्वी के नवीकरणीय व अनवीकरणीय प्राकृतिक संसोधनों का दोहन करना, हिंसात्मक गतिविधियों को अंजाम देना असत्य बोलना, हत्या करना, पाप करना आदि के माध्यम से पृथ्वी को एक ऐसी आग में झोंकने का कार्य किया है, जिससे वह वास्तव में पृथ्वी को पूर्ण विनाश की ओर लेकर जाने की तरफ अग्रसर है। इसी कारणवश मानव को चाहिए कि वह शांति व अहिंसा के माध्यम से पृथ्वी को उसकी मूल स्थिति में लाने का प्रयास करे। क्योंकि जब मानव जाति की (शांति व अहिंसा) अपनी तय सीमा ही मात्र वह साधन है, जिसके माध्यम से परिवार, समाज, देश व विश्व में सामानजस्य की स्थिति को वापस प्राप्त किया जा सकता है। यही नहीं बल्कि यह कहने में यह कदाचित संकोच नहीं करना चाहिए कि अहिंसा ही वह अस्त्र है, जिससे की हिंसात्मक मानव के हृदय को बदलकर उसके हृदय में शांति की स्थापना की जा सकती है।

इसके साथ ही यह कहना भी अति आवश्यक है कि यदि मानव को स्वयं अपना विनाश तय नहीं करना है, या फिर उसे स्वयं ही अपनी इतिहास में विनाश लीला नहीं रचनी है, तो यह उसके लिए परम आवश्यक है कि वह अहिंसा के साये में रहकर ही स्वयं अपना विकास करे व समाज में शांति स्थापित करने का पूर्ण प्रयास करे। आधुनिक विश्व के प्रेरणास्रोत व सत्य व अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी का विचार था कि "सारा समाज अहिंसा पर उसी प्रकार कायम है, जिस प्रकार की गुरुत्वाकर्षण से पृथ्वी की वास्तविक स्थिति जुड़ी हुई है।" अर्थात उनका विचार था जिस प्रकार से पृथ्वी का घर्षण गुरुत्वाकर्षण के नियम को सिद्ध करती है, उसी प्रकार से अहिंसा संपूर्ण मानव समाज की वास्तविक स्थिति का निर्धारण करती है जैसे कि यदि गुरुत्वाकर्षण बल के अभाव में पृथ्वी के अस्तित्व पर संकट आ सकता है। उसी प्रकार से यह भी सत्य ही है कि मानव सभ्यता का अस्तित्व अहिंसा के अस्तित्व पूर्ण रूप से निर्भर है।"

इसी के साथ ही साथ यदि वर्तमान समय की वर्ण व्यवस्था वाले समाज को वर्णहीन व्यवस्था वाले समाज में परिवर्तित करना है, तो अहिंसा ही वह शस्त्र है जिसके प्रयोग से रक्त की एक बूंद भी बहाये बिना ही यह कार्य सिद्ध हो सकता है। क्योंकि अहिंसा का लक्ष्य प्रेम, स्नेह, भावना, विचारों की समानता, एकरूपता आदि को प्राप्त करना है। इसी के साथ ही शांति व अहिंसा का एक अन्य लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना है, जिसमें किसी भी वर्ग विशेष, जाति, धर्म आदि हेतु कोई भी स्थान न हो। इसके साथ ही अहिंसा ही एक ऐसे विश्व का निर्माण कर सकने में सक्षम है, जिसमें किसी भी प्रकार की शत्रुता, वैमनस्य, हिंसा, व्यभिचार, क्रोध आदि के लिए कोई भी स्थान सुरक्षित न हो। अपितु उसका लक्ष्य केवल शांतिमय, समाज का निर्माण करना ही अंतिम वास्तिक लक्ष्य है।

इसी कारणवश महात्मा गांधी ने कहा था कि "अहिंसा मानव का प्राकृतिक गुण है। मनुष्य प्राकृतिक रूप से या स्वाभाविक अहिंसा प्रिय है। परिस्थितियों के कारण ही वह हिंसक बनता है। मनुष्य आदिकाल में नरभक्षी था, लेकिन धीरे–धीरे वह सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बना। मानव की अहिंसक प्रवृति का विकास हुआ। इसी कारण मानव जाति का भी विकास हुआ। इसी के साथ ही उन्होंने कहा था कि "अहिंसा के आधार पर ही सुव्यवस्थित समाज की स्थापना व मानव प्रगति पर निर्भर है। अहिंसा समस्त जीवों का शाश्वत नीयम है। अहिंसा समस्त शक्तियों से अधिक शक्तिशाली है। यह आत्मिक एवं अध्यात्मिक शक्ति का रूप है। अहिंसा में कठोर से कठोर दृष्य को पिघलाने की शक्ति है। यह विद्युत से अधिक निश्चयात्मक और ईश्वर से अधिक शक्तिशाली है।"[1]

वहीं यदि धार्मिक परिप्रेक्ष्य में शांति व अहिंसा की विचारधारा को व्यक्त किया जाये, तो वास्तविक रूप से यह सत्य ही माना जायेगा कि कोई भी धर्म शांति व अहिंसा के अभाव में स्वयं को स्थापित कर पाना उनके लिए असंभव कार्य होगा। क्योंकि यदि मानव हिंसा के पक्ष को अपनाता है, तो उसे अन्य व्यक्तियों के साथ हिंसा करनी होगी जो कि उसके लिए लाभदायक नहीं अपितु हानिकारक ही होगी। गीता में वर्णित अहिंसा की विचारधारा को गांधी जी ने पूर्ण रूप से स्वीकार करते हुए कहते हैं कि "गीता की मुख्य शिक्षा हिंसा नहीं, अहिंसा है। हिंसा बिना क्रोध, आसक्ति एवं घृण्य के नहीं होती और गीता में हमें सत्य, रजस और तमस गुणों के रूप में घृण्णा, क्रोध आदि अवस्थाओं से उपर उठने को कहती है। फिर वह हिंसा की समर्थक कैसे हो सकती है।"[2]

अहिंसा हेतु महाभारत में भी कहा गया है कि "प्राणियों की हिंसा न हो, इसलिए धर्म का उपदेश दिया गया है। अतः जो अहिंसा से युक्त है, वही धर्म है।"[3]

परन्तु वर्तमान समय में जिस स्थिति का सामना सम्पूर्ण विश्व कर रहा है वास्तव में वह एक सोचनीय विषय है। क्योंकि विश्व जिस तीव्र गति के साथ अपनी युद्ध रूपी विनाश लीला को लिख रहा है वह उसके स्वयं हेतु ही नहीं अपितु यह सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक मानव हेतु अत्यन्त घातक सिद्ध होगा। इसी कारणवश विश्व को सर्वाधिक आवश्यकता है कि वह अहिंसा के मार्ग पर अपना स्वयं का वर्तमान व भविष्य न्यौछावर कर दे। वर्तमान समय में जिस प्रकार से यह भयावह स्थिति बद–से–बद्तर होती जा रही है, वह एक अत्यन्त चिन्ता विषय है। इसीलिये यह कहा जा सकता है, कि वर्तमान समाज को अपना प्रत्येक कदम बहुत ही सोच समझकर आगे बढ़ाना होगा, क्योंकि शांति व अहिंसा ही वह साधन है, जिनके माध्यम से बड़े से बड़ा संकट या विवाद को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया जा सकता है, वह भी बिना रक्त की एक भी बूंद बहाये। परन्तु इसके लिए सबसे बड़ा त्याग करना पड़ता है, वह यह है कि अपनी हठधर्मिता का त्याग। जिसके लिए उसे सर्वाधिक साहस की आवश्यकता होती है। अहिंसा कोई साधारण वस्तु न होकर एक अद्भुत शक्ति है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है। इसलिए यह सर्वाधिक उचित समय है कि मानवता को बचाने व सुरक्षित रखने हेतु अहिंसा को प्रसारित किया जाये। क्योंकि विश्व में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होगा, जो सुख, शांति न प्राप्त करना चाहता हो। इसी कारणवश यह जान लेना अति आवश्यक है, कि प्राणियों की मूलभूत प्रवृति अहिंसात्मक है। इसी कारणवश यह माना जा सकता है अहिंसा की आवश्यकता मनुष्य को दैनिक जीवन में सवर्था ही बनी रहती है।

वैश्विक रूप से अहिंसा की विचारधारा वास्तव में मानव सभ्यता के ही साथ उत्पन्न माना जाती है। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो मानव व प्राणी जगत का अंत निश्चय ही हो चुका होता जिसका कारण है मानवीय स्वभाव। मानव का स्वाभाव बड़ा ही सौम्य, स्नेहशील, विशाल हृदय वाला रहा है। परन्तु वह अपनी आवश्यकताओं के वशीभूत होकर ही अन्य व्यक्तियों या मनुष्यों के अधिकारों का हनन करता है, तथा यही लोभ, लालच आदि के कारणवश ही मानव की प्रवृति हिंसक रूप धारण कर लेती। इसलिए यह कहा जाता है, कि यदि मानवों में अहिंसा की भावना न होती तो सम्पूर्ण पृथ्वी मानव विहीन हो जाती।

---

[1] हरिजन, मार्च 14, 1939, पृ. 39

[2] श्रीमद्भगवद् गीता एण्ड चोंसिंग वर्ल्ड, पृ. 122

[3] गीता, 109

परन्तु यदि हम वर्तमान समय के अहिंसा दर्शन की बात करें तो यह गांधी जी का एक नवीन मौलिक दर्शन है। वास्तव में यदि यह कहा जाये कि गांधी जी की अहिंसा में व्यवहारिता समाहित है। गांधी जी ने अहिंसा से संबंधित केवल अपने विचारों से संबंधित ज्ञान को ही प्रस्तुत नहीं किया, अपितु उन्होंने अहिंसा को अपने स्वयं के जीवन में आत्मसात करके उनका प्रयोग किया व सम्पूर्ण भारत देश का इस सिद्धान्त के साथ परिचय करवाया।

इसलिए वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि मानवों को अपना व अपनी पृथ्वी का समय काल बढ़ाना है या फिर शांतिपूर्ण रूप से अपना जीवन व्यतीत करना है तो मानवों को लोभ, लालच, शत्रुता, वैमनस्य हिंसा, अशांति, क्रोध, प्रतिशोध आदि के रूपों को त्याग कर प्रेम, सद्भाव, मित्रता, अहिंसा, शांति का मार्ग अपनाना होगा, तभी पृथ्वी पर मानव अपना जीवन शांति व अहिंसा के साथ'साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने की कल्पना कर में सक्षम होगा। और यह तभी संभव है जब मानव प्रमुख भारतीय धर्मों जैसे– सनातन धर्म, जैन धर्म व बौद्ध धर्म में व्याप्त शांति व अहिंसा के मार्गों का अनुशरण करे व उन धर्मों में व्याप्त अहिंसक विचारधारा व शांति को अपनी जीवन पद्धति में समाहित करे। तभी सम्पूर्ण विश्व का कल्याण संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बन्धोपाध्याय, जे. "सोशल एण्ड पॉलिटकल थॉट ऑफ गांधी", एलाइड पब्लिशर, बाम्बे, 1969
2. भंडारी चंद्रराज, "गांधी दर्शन", गांधी हिंदी मन्दिर, इंदौर, 1969
3. सिन्हा, भगवानदास, "आधुनिक संदर्भ और गांधी विचार", लक्ष्मीनारायण महाविद्यालय प्रकाशन, बिहार, 1970
4. सिंह, रामजी "रिलेवन्स ऑफ गांधीयन थॉट", क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 1956
5. सिंह, रामजी, "गांधी दर्शन मीमांसा", बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1986
6. उपाध्याय, हरिभाऊ, "गांधी–व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1966
7. "विश्व शांति का अहिंसक मार्ग", नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1959
8. हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन, मंदिर, अहमदाबाद, 1973–1982
9. शर्मा जी, रंजीत, "एन इंट्रोडेक्शन गांधीयन थॉट", एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1991
10. सांकृत्यायन, राहुल, दर्शन–दिग्दर्शन, इलाहाबाद, किताब घर, 1944
11. बौद्ध, कमल प्रसाद, बौद्ध धम्म दपर्ण (प्रथम संस्करण), पटना बुद्ध मिशन ऑफ इंडिया, 2002, (बुद्धावद 2546)
12. सिन्हा, वशिष्ठ नारायण, जैन धर्म में अहिंसा, वाराणसी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, 2002
13. समणी, निर्वाण प्रज्ञा, अहिंसा : शिक्षण–प्रशिक्षण, लाडनूँ : जैन विश्वभारती संस्थान, 2007
14. धर, अनिल, अहिंसा एवं शान्ति : एक अध्ययन, लाडनूँ : जैन विश्वभारती संस्थान, 2015
15. आचारांग
16. सामवेद
17. ऋग्वेद (भाष्यम्), सम्पादक– विश्वनाथ विद्यालंकार, करनाल, 1983
18. उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा वाराणसी : जौखम्भा विद्या भवन, 1969
19. विनय पिटक, राहुल सांकृत्यायन, नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन, 2008 (बुद्धाब्द–2053)
20. कोसाम्बी, धर्मानन्द, भारतीय संस्कृति और अहिंसा (द्वितीय संस्करण) नई दिल्ली : सम्यक् प्रकाशन, 2011 (बुद्धाब्द–2554)
21. आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा एवं शांति, नई दिल्ली : आदर्श साहित्य संघ, 2005
22. बापड़, बी.पी. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार), 2010
23. ऋग्वेद, पूना : वैदिक शोध संस्थान, 1937–1946
24. अर्थवेद, बम्बई : निर्णय सागर प्रेस, 1895–1998